कुमार जीवन - 45

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ है। (3) सभी समर्थ कुमार हो ना! समर्थ हो? सदा समर्थ आत्मायें जो भी संकल्प करेंगी, जो भी बोल बोलेंगी, कर्म करेंगी वह समर्थ होगा। समर्थ का अर्थ ही है - व्यर्थ को समाप्त करने वाले। व्यर्थ का खाता समाप्त और समर्थ का खाता सदा जमा करने वाले। **कभी व्यर्थ तो नहीं चलता? व्यर्थ संकल्प या व्यर्थ बोल या व्यर्थ समय।** अगर सेकण्ड भी गया तो कितना गया! संगम पर सेकण्ड कितना बड़ा है। सेकण्ड नहीं लेकिन एक सेकण्ड एक जन्म के बराबर है। एक सेकण्ड नहीं गया, एक जन्म गया। ऐसे महत्व को जानने वाले समर्थ आत्मायें हो ना।

➳ _ ➳ सदा यह स्मृति रहे कि हम समर्थ बाप के बच्चे हैं, समर्थ आत्मायें हैं। समर्थ कार्य के निमित्त हैं। तो सदा ही उड़ती कला का अनुभव करते रहेंगे। कमज़ोर उड़ नहीं सकते। समर्थ सदा उड़ते रहेंगे। तो कौन सी कला वाले हो? उड़ती कला या चढ़ती कला? चढ़ने में सांस फूल जाता है। थकते भी हैं, साँस भी फूलता है। और उड़ती कला वाले सेकण्ड में मंजिल पर सफलता स्वरुप बने। **चढ़ती कला है तो जरुर थकेंगे, साँस भी फूलेगा - क्या करें, केसे करें, यह साँस फूलता है। उड़ती कला में सबसे पार हो जाते। टचिंग आती है कि यह करें, यह हुआ ही पड़ा है। तो सेकण्ड में सफलता की मंजिल को पाने वाले - इसको कहा जाता है समर्थ आत्मा।**

➳ _ ➳ बाप को खुशी होती है कि सभी उड़ती कला वाले बच्चे हैं, मेहनत क्यों करें। बाप तो कहेंगे - बच्चे मेहनत से बचे रहें। जब बाप रास्ता दिखा रहा है - डबल लाइट बना रहा है तो फिर नीचे क्यों आ जाते हो? क्या होगा, कैसे होगा, यह बोझ है। **सदा कल्याण होगा, सदा श्रेष्ठ होगा, सदा सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है, इस स्मृति से चलो। (11-05-1984)**

➢➢ कल्पना शक्ति

➳ _ ➳ अवचेतन मन शब्दों की नहीं... चित्रों की भाषा समझते हैं

→ इसलिए अपने जीवन के लक्ष्य को Visualise करो

→ मुरली सुनते हुए Visualise करो... जो कुछ भी मुरली में कहा जा रहा है...

- तभी हमारे अंतर्मन की Programming होगी
- तभी ज्ञान की धारणा हम सहज रीति से कर पायेंगे

→ बहुत ज्यादा पड़ने का लक्ष्य नहीं रखो

- पर जो भी पड़ो
  - उसे चित्र में रूपांतरित करो

→ जब बाबा उड़ती कला की बात करे

- तो स्वयं को उड़ता हुआ देखिये

→ कल्पना की कोई सीमा नहीं है

→ कल्पना बहुत शक्तिशाली होती है

- वास्तविक क्रिया से भी ज्यादा शक्तिशाली होती है

→ वास्तविक क्रिया से भी ज्यादा आनंद कल्पना में मिलता है